HISTORY

B.A.PART-I (Hons)

Paper-II (The Rise of Modern west)

Unit-III, (Development of France As National State)

Dr. GUDDY KUMARI

(Guest Lecturer), History Deptt.

A.N.D. College, Samastipur

Lecture Series - 81

"फ्रांस में राष्ट्रीय राजतन्त्र का विकास"

(DEVELOPMENT OF NATIONAL MONARCHY IN FRANCE)

मध्ययुगीन फ्रान्स में राजसत्ता पूर्ण रूप से सामंतों के हाथों में थी। सामन्तों के नेता बरगंडी के ड्यूक ने 1461 ई. में फ्रांस के राजा लुई ग्यारहवे को राजमुकुट पहनाया था। वह सामन्तों में सबसे धनी तथा शक्तिशाली था लेकिन लुई ग्यारहवाँ योग्य शासक था। उसके शासन काल (1461 - 1483 ई.) में फ्रान्स में निरंकुश राजतन्त्र का विकास हुआ। सामन्तों की शक्ति कम करने के उसने कई उपाय किये। उसका मुख्य कार्य यह था कि उसने कृषकों को सामन्तों के विरुद्ध प्रोत्साहित किया। नगरों की जनता को उसने अनेक सुविधाएँ देकर अपने पक्ष में कर लिया। लुई फ्रांस का पहला राजा था जिसने व्यापार तथा उद्योग को प्रोत्साहन दिया और जनता का समर्थन प्राप्त करने का प्रयत्न किया था। सामन्तों को दुर्बल करने के लिये उसने अनेक प्रयास किये थे।

फ्रांस का एकीकरण लुई ग्यारहवे के शासन काल में ही हुआ और उसका राष्ट्र के रूप में निर्माण हुआ। फ्रांस का राष्ट्र निर्माता उसे माना जाता है। मध्यम वर्ग ने सामन्तों के विरुद्ध उसका समर्थन किया। सामन्तों के भू-अधिकारों को समाप्त करने में लुई ने सफलता प्राप्त की। सामन्ती न्यायालयों को समाप्त करके उनके स्थान पर उसने राजकीय न्यायालय स्थापित किये। फ्रांस में उद्योगों को उसने संरक्षण दिया, जलयानों का निर्माण कराया। समस्त फ्रान्स में एक मुद्रा तथा एक माप-तौल प्रणाली लागू की। चर्च की निरंकुशता को भी उसने नियन्त्रित किया। वस्तुत: उसने ही फ्रांस में राजा की निरंकुश सत्ता की नीव डाली थी बाद में जिसे रिश्लू ने पूरा किया।

हेनरी चतुर्थ (1589 - 1610 ई.) और सामन्त वर्ग-- लुई ग्यारहवें के बाद लुई बारहवें (1498-1515) फ्रांसिस प्रथम के काल में पुनर्जागरण तथा मानववादी प्रवृत्तियों के प्रभाव में वृद्धि हुई। यद्यपि सामन्तों का दमन करने के प्रयास किए गए थे, फिर भी उनका पूरा दमन नहीं हुआ था। अनेक विशेषाधिकार उनके पास थे और प्रशासन में भी उन्हें उच्च पद प्राप्त थे। फ्रांस में 1589 ई. में हेनरी चतुर्थ के राज्यारोहण से नवीन युग का आरंभ हुआ। लम्बे समय तक उसे गृह युद्ध का सामना करना पड़ा था। निरन्तर युद्धों के कारण सामन्त वर्ग पुन: शक्तिशाली हो गया था। वे राजा के विरोधी तथा अवज्ञाकारी हो गये थे। हूजनाटों पर अत्याचार इस गृह युद्ध का मूल कारण था। ह्युजनाट

फ्रांस के प्रोटेस्टेन्ट थे जिनसे बहुसंख्यक कैथोलिक घृणा करते थे। हेनरी चतुर्थ ह्युजनाट था लेकिन कैथोलिकों को सन्तुष्ट करने के लिये उसने कैथोलिक धर्म स्वीकार कर लिया था। गृह युद्ध को समाप्त करके उसका उद्देश्य ह्युजनाटों को धार्मिक स्वतन्त्रता देना था। लुई ग्यारहवें तथा फ्रान्सिस प्रथम से सामन्तों के विरुद्ध किये गये कार्य गृहयुद्ध के कारण प्रभावहीन हो गये थे। हेनरी चतुर्थ ने अवज्ञाकारी सामन्तों से युद्ध किया और राजतन्त्र को पुनः सुदृढ़ किया। अपने मन्त्री सली की उसे इस कार्य में महान सेवाएँ प्राप्त हुई। राजा की सेवा में सली ने प्रथम बार स्थायी सेना का निर्माण किया जिससे सामन्तों पर नियन्त्रण रखा जा सके। हेनरी ने सामन्तों की शक्ति को दुर्बल रखने के लिये स्टेट्स जनरल को कभी नहीं बुलाया और पार्लेमाँ पर नियन्त्रण रखा।

रिश्लू द्वारा सामंतों का दमन-- सामंतों ने हेनरी की मृत्यु के पश्चात् स्थान-स्थान पर अपने अधिकारों की रक्षा के लिये विद्रोह कर दिये। उन्हें धन तथा पद देकर किसी प्रकार सन्तुष्ट करने का प्रयत्न किया गया। हेनरी का पुत्र लुई तेरहवाँ अल्पवयस्क था और उसकी माँ मेरी डि मेडिसी संरक्षिका थी। सौभाग्य से लुई तेरहवें को रिश्लू जैसा प्रतिभाशाली मन्त्री प्राप्त हुआ। रिश्लू 18 वर्षों तक (1624-1642 ई.) मन्त्री के रूप में फ्रान्स का सर्वेसर्वा रहा। फ्रांस की राष्ट्रीय एकता स्थापित करना और फ्रांस के राजतन्त्र को पूर्ण निरंकुश बनाना उसके दो उद्देश्य थे। सामन्त प्रान्तों के गवर्नर थे। उनके पास अपनी सेनाएँ होती थीं। उनके पास सुरक्षित दुर्ग थे। वे शासकों के समान प्रान्तों में राज्य करते थे। उनमें द्वंद्व युद्ध और व्यक्तिगत शत्रुताओं की परम्पराएँ थीं। सामन्तों के षड्यन्त्रों का पता लगाकर रिश्लू ने उन्हें प्राणदण्ड दिया। सामन्तों के किलों को उसने गिरवा दिया और उन्हें सैनिक रखना प्रतिबन्धित कर दिया। द्वन्द युद्ध को उसने निषिद्ध तथा दण्डनीय अपराध घोषित किया। साधारण वर्ग के लोगों को उसने प्रशासनिक अधिकारी नियुक्त किया। उसने गुप्तचरों के द्वारा उनमें भय उत्पन्न कर दिया। सामन्तों के विशेषाधिकार उसने छीन लिये। उसने न्याय, पुलिस तथा कर-संग्रह के अधिकारो को भी उसने छीन लिया। उसने इन्टेन्डेन्ट नामक अधिकारियों को इन प्रशासनिक कार्यों के लिये नियुक्त किया। उसने इस प्रकार प्रशासन का केन्द्रीकरण कर दिया।

लुई चतुर्दश और मेजारिन– 1642 ई. में रिश्लू की मृत्यु के पश्चात् कार्डिनल मोजरिन प्रधानमन्त्री नियुक्त हुआ। सामन्तवाद को नष्ट करने तथा राजा की सत्ता को निरंकुश बनाने के लिये उसने रिश्लू की नीति का पालन किया। फ्रांस को यूरोप की सर्वश्रेष्ठ शक्ति बनाने के लिये उसने तीस-वर्षीय युद्ध में हस्तक्षेप किया। लुई चतुर्दश के शासन काल में निरंकुश राजतन्त्र की चरम सीमा प्राप्त हुई (1643--1715 ई.)। वह गर्व से कहता था, मैं ही राज्य हुं।

इस प्रकार फ्रांस के इन शासकों और मंत्रियों की सहायता से फ्रांस का उदय एक राष्ट्रीय राज्य के रूप में हुआ।

धन्यवाद